यीशु किस दिन मरा था?

यीशु के जी उठने के बारे में विस्तार से अध्ययन करने के लिए इस विषय पर और विचार की प्रतिज्ञा के साथ ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 184 पर ''तीन दिन और तीन रातें'' (मत्ती 12:40) एक लेख था। अन्य जगहों पर भी हमने अन्तिम सप्ताह के कालक्रम, विशेष रूप से यीशु की मृत्यु किस दिन हुई और वह कब्र में कितनी देर तक रहा, की चर्चा के बारे में कहा था। पिछले अध्ययन में, हमने यीशु के कब्र में रहने के समय से सम्बन्धित अधिकतर आयतों को देखा था, परन्तु इस बार हम पूरे विषय की ही समीक्षा करेंगे।

हमारी चर्चा इस तथ्य से आरम्भ होती है कि *यीशु सप्ताह के पहले दिन जी उठा*। मरकुस ने लिखा है कि यीशु ''सप्ताह के पहिले दिन भोर होते ही'' जी उठा (मरकुस 16:9)[1] सुसमाचार के अन्य वृत्तांतों में भी यही बात कही गई है।[2] आगे बढ़ने से पहले, हमें इस मूल सच्चाई को स्वीकार करना आवश्यक है।

यह मानते हुए कि हम उसके *जी उठने* के दिन पर सहमत हैं, हमारा मूल प्रश्न यही है कि ''यीशु किस दिन *मरा* था?'' वर्षों से, अधिकतर लोगों का यही विश्वास है कि यीशु यहूदी सप्ताह के छठे दिन अर्थात शुक्रवार वाले दिन मरा।[3] रॉबर्ट थॉमस और गुंड्री ने लिखा है, ''कलीसिया ने शुक्रवार को उस दिन के रूप में देखा है, जब यीशु मरा था। बाइबल का सबसे अच्छा प्रमाण शुक्रवार के दिन क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात का पक्षधर है।''[4] मसीह की सेवकाई के अन्तिम सप्ताह का मेरा समन्वय इसी निष्कर्ष पर आधारित है।

परन्तु, वर्षों से अलग-अलग विचार पैदा हुए हैं। उदाहरण के लिए, दूसरी शताब्दी में, कलीसिया का एक गुट मसीह द्वारा फसह का भोज खाए जाने के दिन को मनाने लगा। इसके विरोध में, कुछ लोगों ने इनकार किया कि यीशु ने वास्तव में फसह खाया था। इस तथ्य से कि यीशु उसी दिन मरा, जिस दिन उसने भोज खाया था (यह जो भी था) मसीह के मरने के दिन की शिक्षा प्रभावित हुई।

कुछ लोग आज भी सिखाते हैं कि यीशु शुक्रवार के दिन नहीं मरा था। यूनानी विद्वान बी. एम. वैस्टकॉट का तर्क था कि मसीह गुरुवार के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया था।[5] प्रसिद्ध *नैरेटिड बाइबल* में सुझाव है कि यीशु गुरुवार के दिन मरा होगा।[6] मेरी फाइलों में एक पुस्तिका है, जो मुझे विदेश से किसी भाई ने भेजी थी, उसमें ज़ोर दिया गया है कि प्रभु की मृत्यु बुधवार को हुई थी।

इस प्रश्न के निष्कर्ष पर पहुंचना *विश्वास का विषय नहीं* है। जब तक हम इस बात पर सहमत हैं कि *यीशु पहले दिन जी उठा था,* हम अपनी संगति पर असहमति के प्रभाव बिना उसके मरने के दिन पर असहमत हो सकते हैं। यह प्रश्न मुख्यतया यीशु की सार्वजनिक

सेवकाई के अन्तिम सप्ताह की घटनाओं को हमारे क्रमबद्ध करने के ढंग का है। तौ भी क्योंकि इससे कुछ लोगों को फर्क पड़ता है, इसलिए हम इस पर कुछ समय के लिए चर्चा करेंगे।

शुक्रवार के दिन उसके मरने पर विश्वास करने के कारण

पहले तो, मैं आपको दो कारण बताना चाहता हूं कि यीशु के शुक्रवार के दिन मरने की बात पर मैं क्यों विश्वास करता हूं। (इस लेख की टिप्पणियों में अतिरिक्त जानकारी के लिए आपको पिछले अध्ययनों में देखने के लिए कहा जाएगा।)

(1) मेरा विश्वास है कि यीशु ने वास्तव में फसह खाया यानी ''फसह जैसा'' कुछ नहीं ''बल्कि फसह'' का भोज।[7] यह प्रश्न कि यीशु ने वास्तव में फसह खाया या नहीं, इस चर्चा का आवश्यक भाग है। लूका ने लिखा है, ''तब अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का दिन आया, जिस में *फसह* का मेमना बली करना अवश्य था'' (लूका 22:7)। मत्ती ने कहा है कि ''अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिए *फसह* की तैयारी करें'' (मत्ती 26:17)। यीशु ने चेलों को बताया, ''नगर में अमुक व्यक्ति के पास जाकर उससे कहो कि गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां *पर्व* मनाऊंगा'' (मत्ती 26:18)। तब, ''चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी और *फसह* तैयार किया'' (मत्ती 26:19)। ''जब सांझ हुई [फसह का आरम्भ तैयारी कर लेने के बाद सूर्यास्त के बाद हुआ], तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिए बैठा'' (मत्ती 26:20)। भोजन के लिए अपने चेलों के साथ झुके हुए, ''उसने उनसे कहा, मुझे बड़ी लालसा थी कि दुख भोगने से पहले *यह फसह* तुम्हारे साथ खाऊं'' (लूका 22:15)। इन आयतों से, मैं यह निष्कर्ष निकालता हूं कि यीशु ने फसह का भोज खाया।[8] क्योंकि यीशु उसी दिन मरा जिस दिन उसने भोज खाया और क्योंकि आम सहमति है कि उस वर्ष फसह शुक्रवार के दिन आया था, इसका अर्थ यह होगा कि यीशु शुक्रवार के दिन मरा था।

(2) मेरा विश्वास है कि यीशु सातवें दिन वाले सब्त से पहले दिन मरा था। सुसमाचार के सभी वृत्तांतों में यह संकेत है कि यीशु ''तैयारी के दिन'' मरा था (यूहन्ना 19:31; देखें मरकुस 15:42; लूका 23:54; देखें मत्ती 27:62)। यह सब्त की तैयारी का दिन था। मरकुस ने लिखा है कि यह ''तैयारी का दिन था, जो *सब्त के एक दिन पहले* होता है'' (मरकुस 15:42; देखें लूका 23:54; यूहन्ना 19:31)। कुछ लोगों ने सातवें दिन के अलावा पर्व के दौरान इस ''सब्त'' को विशेष ''विश्राम का दिन'' बनाने की कोशिश की है, परन्तु कब्र पर दो स्त्रियों के बारे में लूका का कालक्रम ऐसे निष्कर्ष को खारिज करता दिखाई देता है।

- यूसुफ और निकुदेमुस के द्वारा यीशु को दफ़नाने के विषय में, लूका ने लिखा है, ''वह तैयारी का दिन था, और *सब्त का दिन आरम्भ होने पर था*'' (लूका 23:54)। जब ये दोनों यीशु की देह को तैयार कर रहे थे, तो दो स्त्रियां उन्हें देख रही थीं (लूका 23:55)।

- सूर्यास्त होने और सब्त का आरम्भ होने पर, दो स्त्रियों ने "लौटकर [क्षेत्र में जहां वे रह रही थीं] सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया" (लूका 23:56क)। फिर "*सब्त के दिन* तो *उन्होंने* आज्ञा के अनुसार *विश्राम किया*" (लूका 23:56ख)।
- "*परन्तु सप्ताह के पहिले दिन* बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को, जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आईं" (लूका 24:1)।

लूका 24:1 में लूका 23:56 की ही बात है। संकेत यह है कि "सप्ताह का पहला दिन" सब्त के तुरन्त बाद का दिन है, जब उन्होंने विश्राम किया (देखें मत्ती 28:1), जो सब्त को सामान्य सातवें दिन का सब्त बनाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि सब्त से पहला दिन (जिसमें मसीह मरा) सप्ताह का छठा सामान्य दिन ही था, जिसे शुक्रवार कहा जाता है।

आपत्ति #1: तीन रातों का अर्थ "72 घण्टे" है

शुक्रवार के दिन यीशु के मरने की बात पर मुख्य आपत्ति मत्ती 12:40 में मसीह की बात है कि जैसे "योना तीन रात-दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे-ही मनुष्य का पुत्र तीन रात-दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।" कुछ लोग, "तीन रात-दिन" शब्दों को लेकर यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह किस दिन मरा था, मूलत: सप्ताह के पहले दिन से जिस दिन मसीह जी उठा था, पीछे की ओर गिनती करते हैं। फिर वे इसे अपने निष्कर्ष के अनुकूल बनाने के लिए वचन के अन्य विवरणों को जोड़ते हैं।

प्रश्न यह है कि यीशु "तीन रात-दिन" शब्दों का अर्थ बहत्तर घण्टे के तीन कालों के रूप में लेना चाहता था या नहीं।[9] इस बात से कि वह अक्सर "तीसरे दिन" जी उठने की बात करता था, ऐसा लगता नहीं है (मत्ती 16:21; 17:23; 20:19; लूका 24:7, 21, 46)। परमेश्वर की प्रेरणा से, पौलुस ने आरम्भिक कलीसिया के विश्वास को व्यक्त किया, जब उसने कहा कि यीशु "*तीसरे* दिन जी भी उठा" (1 कुरिन्थियों 15:4)। "तीन दिन और तीन रातों" के बाद जी उठना मूलत: "तीसरे दिन नहीं, बल्कि चौथे दिन" होता।[10]

पुराने नियम में ऐसी ही शब्दावली के लिए, देखें एस्तेर 4:16 और 5:1. 4:16 में एस्तेर ने मोर्दके और अन्य यहूदियों से "तीन दिन-रात" उपवास रखने के लिए कहा था और कहा था कि वह और उसकी सहेलियां भी वैसे ही करेंगी। तीन दिनों के बाद, उसने राजा के पास जाना था। परन्तु 5:1 में लिखा है कि "तीसरे दिन" एस्तेर राजा के सामने गई।

मत्ती 12 और एस्तेर 4 व 5 में "तीन दिनों" शब्दों के इस्तेमाल को हम कैसे समझा सकते हैं? कई विद्वान सहमत हैं कि "यहूदी लोग दिन के एक भाग को आरम्भ या अन्त में आने पर एक पूरा दिन मानते थे।"[11] समय का यह अनिश्चित इस्तेमाल इस चर्चा की मुख्य आयतों में देखा जा सकता है:

- कई बार वचन में यीशु के तीसरे दिन *के बाद* (यू.: *meta*) जी उठने की बात मिलती है (मत्ती 27:63; मरकुस 8:31; देखें मरकुस 9:31; 10:34[12])।

- दूसरी ओर, वचन में यह भी संकेत मिलता है कि यीशु ने *तीसरे* दिन जी उठना था (मत्ती 16:21; 17:23; 20:19; लूका 9:22; 18:33; 24:7, 46; देखें 1 कुरिन्थियों 15:4)।
- कई बार, जी उठने पर समानांतर पदों में, ''बाद'' और ''पर'' शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे के स्थान पर किया जाता है। उदाहरण के लिए, मरकुस ने लिखा कि यीशु ने कहा कि ''तीन दिन *बाद*'' वह ''फिर जी उठेगा'' (मरकुस 8:31) जबकि, मत्ती और लूका के अनुसार उसने कहा कि वह ''*तीसरे* दिन जी उठेगा'' (मत्ती 16:21; लूका 9:22)।
- मसीह के शत्रुओं ने यीशु की बात दोहराते हुए यह कहा, ''तीन दिन के *बाद* जी उठूंगा'' (मत्ती 27:63), परन्तु उन्हें ''तीन दिनों'' का अर्थ बहत्तर घण्टे के काल की समझ नहीं थी, बल्कि उनकी चिन्ता ''तीसरे दिन *तक* कब्र की रखवाली'' करने के लिए थी (मत्ती 27:64)।[13]

यीशु की मृत्यु के लिए कोई चाहे कोई भी दिन चुने, '' 'तीन दिन-रात' का अर्थ सुसमाचार के विवरणों से बहत्तर घण्टे के रूप में नहीं निकाला जा सकता।''[14] यह समझना बेहतर है कि मत्ती 12:40 में यीशु ''कालक्रम में गणित की तरह उत्तर पाने'' का प्रयास नहीं कर रहा था,[15] बल्कि उस बड़ी मछली के ''पेट में'' योना की घटना का इस्तेमाल कब्र में अपने रहने के रूप में कर रहा था।

आपत्ति #2: यूहन्ना की घटनाएं सुसमाचार के समानांतर वृत्तांतों से भिन्न हैं

मत्ती 12:40 के बाद, शुक्रवार के दिन क्रूस पर चढ़ाने की बात पर सबसे सामान्य आपत्ति यह है कि यूहन्ना के वृत्तांत की पांच आयतें सुसमाचार के समानांतर वृत्तांतों के समय में मसीह के जीवन की अन्तिम घटनाओं से भिन्न हैं। ए. टी. रॉबर्टसन ने इन वचनों पर इस टिप्पणी के साथ विस्तृत चर्चा की है: ''... इन पदों में से प्रत्येक की सावधानीपूर्वक जांच से पता चल जाएगा कि यूहन्ना यह नहीं कहता कि यीशु ने सामान्य समय से एक दिन पहले फसह का भोज खा लिया, बल्कि इसके विपरीत है।''[16] कागज़ की कमी इस प्रश्न की कुछ आयतों के साथ संक्षिप्त टिप्पणियां देने की अनुमति ही देगी।[17]

- यूहन्ना 13:1 में ''फसह के पर्व से पहले'' कहा गया है, जबकि अगली आयत ''भोजन के समय'' शब्दों से समाप्त होती है। शुक्रवार को क्रूस की बात नकारने वाले लोग यह आरोप लगाते हैं कि यूहन्ना 13:1, 2 से साबित होता है कि ऊपरी कमरे में खाया गया भोजन फसह नहीं हो सकता। परन्तु यूहन्ना के वृत्तांत की तुलना समानांतर वृत्तांतों से करने पर, यूहन्ना 13:1 फसह के तुरन्त पहले के समय की बात करता प्रतीत होता है, जबकि आयत 2 के अन्त में फसह के

भोजन की बात भी है।

- ऊपरी कमरे में भोजन के समय यीशु ने यहूदा से कहा, ''जो तू करता है, तुरन्त कर'' (यूहन्ना 13:27)। दूसरे प्रेरितों को लगा कि यीशु उसे कह रहा है कि ''जो कुछ हमें पर्ब्ब के लिए चाहिए वह मोल ले'' (यूहन्ना 13:29)। शुक्रवार के दिन क्रूस की बात को नकारने वालों का मानना है कि ''पर्व'' फसह को कहा गया है, और इसलिए यीशु और प्रेरित फसह नहीं खा सकते थे। यह अनावश्यक निष्कर्ष है। एक दिन के फसह के पर्व के बाद सप्ताह भर चलने वाला अखमीरी रोटी का पर्व होता था। दूसरे प्रेरितों ने यह सोचा होगा कि यहूदा बाद वाले फसह के लिए तैयारी करने जा रहा है।
- यीशु को पिलातुस के पास लाने वाले ''आप किले के भीतर न गए, ताकि अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें'' (यूहन्ना 18:28)। शुक्रवार को क्रूस की बात नकारने वाले यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह बात ऊपरी कमरे में भोजन के बाद लिखी गई है, इसलिए पहले वाला भोजन फसह नहीं हो सकता। रॉबर्टसन ने लिखा है:

> पहली नज़र में यह विरोधाभास नहीं लगता है। ... परन्तु नये नियम में ''फसह'' पर शब्द का इस्तेमाल तीन अर्थों में किया गया है, पस्कल का भोजन, पस्कल का मेमना या पस्कल का पर्व। यूहन्ना में इस घटना के अलावा इस शब्द का इस्तेमाल आठ बार हुआ है और हर बार उसका अर्थ फसह का पर्व ही है।[18]

क्योंकि, समानांतर वृत्तांतों के लेखकों के अनुसार, पस्कल का भोजन पहले शाम को खा लिया गया था (मत्ती 26:17–19; मरकुस 14:12, 14, 16; लूका 22:8, 11, 13, 15), महासभा के प्रतिनिधियों के मन में स्पष्टतया आठ दिन के पर्व के सम्बन्ध में खाया जाने वाला भोजन होगा (होंगे)।[19]

- यूहन्ना ने यीशु की परीक्षा के समय को ''फसह की तैयारी का दिन'' कहा (यूहन्ना 19:14)। शुक्रवार के दिन क्रूस पर चढ़ाने की बात का इनकार करने वाले यह मानते हैं कि ''तैयारी का दिन'' वाक्यांश फसह के भोजन की तैयारी के दिन के लिए है, परन्तु यहूदियों द्वारा इस शब्द का इस्तेमाल सब्त की तैयारी के लिए है (देखें मत्ती 27:62; मरकुस 15:42; लूका 23:54; यूहन्ना 19:31, 42)।[20] इस पद में, ''फसह'' शब्द का अर्थ पर्व के लिए लिया जाना चाहिए, न कि यूहन्ना 18:28 वाले भोजन के लिए। अन्य शब्दों में, यह ''फसह [वाले सप्ताह में आने वाले सब्त] की तैयारी का दिन'' था।
- यूहन्ना 19:31 में संकेत मिलता है कि यीशु की मृत्यु का अगला दिन ''सब्त'' था, पर इसे ''बड़ा दिन'' माना गया है। शुक्रवार को क्रूस की बात पर आपत्ति करने वाले इसका अर्थ यह निकालते हैं कि यह एक सामान्य (सातवां दिन)

सब्त नहीं, बल्कि फसह के दौरान मनाए जाने वाले विश्राम के अन्य दिनों में से था। जैसा कि पहले कहा गया है, लूका के कालक्रम से संकेत मिलता है कि यह सामान्य सात दिन का सब्त था, और संदर्भ में इसके अलावा और कोई संकेत नहीं है। यह तथ्य कि यह सब्त आठ दिन चलने वाले पर्व में आया, इसे ''अति विशेष'' बना देता है।[21]

विश्वास की बात?

शुक्रवार को क्रूस पर चढ़ाए जाने पर और आपत्तियों का उल्लेख किया जा सकता था,[22] परन्तु मैंने इस विषय पर काफ़ी समय और कागज़ ले लिया है। मैं हेस्टर के साथ सहमत हूं, जिसने कहा है कि ''इन सभी तथ्यों की रोशनी में, यह मानना तर्कसंगत लगता है कि [यीशु] शुक्रवार शाम से रविवार भोर तक कब्र में रहा था। यह विचार सुसमाचार की सभी शर्तों से मेल खाता है।''[23]

परन्तु प्रमाण को मापकर अपना निष्कर्ष निकालने के लिए मैं आप पर छोड़ता हूं। मैं आपसे केवल यही याद रखने का आग्रह करता हूं कि यह विश्वास का विषय *नहीं* है। यदि आपका निष्कर्ष मेरे निष्कर्ष से अलग हो, तो भी मैं आपको भाई ही मानूंगा और मुझे उम्मीद है कि आप भी मुझे ऐसा ही मानेंगे।

टिप्पणियां

[1]मरकुस 16:9 मरकुस की पुस्तक का विवादित समापन है। इस विवादित समापन पर इस पुस्तक में आगे लेख देखें। [2]पुनरुत्थान पर इस पुस्तक में पहले मिलने वाली चर्चा देखें। [3]याद रखें कि यहूदियों का दिन सूर्यास्त से सूर्योदय तक होता था। [4]रॉबर्ट एल. थॉमस, सं., एण्ड स्टैनली एन. गुंडरी, सह. सं., *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1978), 320. [5]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 187. [6]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, द *नैरेटिड बाइबल इन क्रोनोलॉजिलक ऑर्डर* (यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 1984), 1454–56. [7]''मसीह का जीवन, भाग 6'' में पृष्ठ 34 पर ''तैयार होना'' पाठ देखें। [8]''यूहन्ना का चेला, पोलीकार्प, इस मान्यता को व्यक्त करता है कि यीशु ने फसह खाया'' (ए. टी. रॉबर्टसन, *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फ़ॉर स्टूडेंट्स ऑफ़* द *लाइफ़* द *क्राइस्ट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950], 280)। [9]इस आयत पर अतिरिक्त चर्चा के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 184 पर ''तीन दिन और तीन रातें'' लेख देखें। [10]फोस्टर, 192.

[11]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, द *फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़* द *फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं, 1914), 306. उदाहरण के लिए, देखें उत्पत्ति 42:17, 18; 1 शमूएल 30:12, 13; 1 राजा 20:29; 2 इतिहास 10:5, 12. इब्रानियों 11:30 की यहोशू 6:15 से तुलना भी करें। [12]मूल बाइबल में, मरकुस 9:31 और 10:34 में ''तीन दिनों के बाद [यू.: *meta*] है,'' परन्तु NASB में इसका अनुवाद ''तीन दिन बाद'' है। एक और उपसर्ग (*dia*) है, जिसका अर्थ ''बाद'' है और मत्ती 26:61 तथा मरकुस 14:58 में इसका अनुवाद हुआ है। [13]इस पुस्तक में पहले आया पाठ ''इतिहास के तीन सबसे महत्वपूर्ण दिन'' देखें। [14]फोस्टर, 191. क्रूसारोहरण को बुधवार के दिन रखने पर यह बहत्तर घण्टों *से अधिक* हो जाता है; गुरुवार के दिन रखने से यह दो दिन और तीन रातों के *भाग* बन जाता है, परन्तु पूरे बहत्तर

घण्टे नहीं।[15]वही।[16]रॉबर्टसन, 281–84.[17]रॉबर्टसन ने और अधिक विस्तृत चर्चा शामिल की। थॉमस तथा गुंडरी ने एक अलग ढंग अपनाया, जिन्होंने कहा कि मसीह शुक्रवार के दिन मरा था। उन्होंने यूहन्ना तथा सुसमाचार के समानांतर वृत्तांतों को यह सुझाव देते हुए मिलाया कि लेखक समय तथा दिनों का संकेत देने के लिए अलग–अलग ढंगों का इस्तेमाल कर रहे थे (थॉमस एण्ड गुंडरी, 321–22)।[18]रॉबर्टसन, 282–83. सुसमाचार के समानांतर वृत्तांत के लेखकों ने पस्कल के भोजन के लिए "फसह" शब्द का इस्तेमाल किया, परन्तु हमारी रुचि इस बात में है कि *यूहन्ना* ने इस शब्द का इस्तेमाल कैसे किया।[19]यह सिद्ध करने के लिए कि इस आयत में "फसह" का अर्थ पस्कल का भोज नहीं है, एक और ढंग यह है: प्रिटोरियम में प्रवेश से अगुवे केवल सूर्यास्त तक अशुद्ध होते होंगे। (औपचारिक अशुद्धता के सूर्यास्त तक रहने के उदाहरण के लिए, देखें लैव्यव्यवस्था 15:1–24; 17:15, 16।) इसलिए यदि प्रश्न में दिन फसह के पहले वाला है, तो वे सूर्यास्त के बाद भी पस्कल का भोज खा सकते थे। उन्हें पस्कल के भोज की चिंता नहीं होगी बल्कि किसी और भोजन की होगी।[20]यीशु के शुक्रवार को मरने पर विश्वास के लिए मेरा दूसरा कारण (इस पाठ में पहले दिया गया) देखें।

[21]इस पुस्तक में पहले आए पाठ "इतिहास के तीन सबसे महत्वपूर्ण दिन" देखें।[22]उदाहरण के लिए शिक्षात्मक तर्क है, जिस पर पुराना नियम फसह के बारे में सिखाता है। एक विषयात्मक तर्क में सुझाव है कि मसीह के लिए मन्दिर में बलिदान किए जाने वाले पस्कल के मेमनों के साथ ही गुरुवार के दिन क्रूस पर बलिदान किया जाना सही था।[23]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 224.